दिल्ली सल्तनत का इतिहास

वास्तुकला की विशेषताएँ :-

* तुगलक वंश में ढलवा दीवारे थी।
* लोदी वंश में अष्टभुजाकार इमारतो का निर्माण
* फिरोजशाह तुगलक ने फिरोजाबाद, फिरोजपुर, जौनपुर, फतेहाबाद जैसों शहरों का ही निर्माण नही किया बल्कि 40 से 45 किमी नहरो का भी निर्माण कराया। सिचाई का 1/10 भाग कर वसूल करने वाला पहला शासक

आधुनिक दिल्ली वस्तुत: 7 मध्यकालीन शहरो का समीकरण है:

रायपिथौडागढ़ - बलवन के द्वारा निर्मित
सिरी - अलाउददीन खिलजी द्वारा निर्मित
तुगलकाबाद - ग्यासुददीन तुगलक द्वारा निर्मित
जहॉपनाह - मोहम्मद बिन तुगलक द्वारा निर्मित
कोटला फिरोजशाह - फिरोजशाह तुगलक द्वारा निर्मित
किला-ए-कुहना - शेरशाह के द्वारा निर्मित
शाहजहानाबाद - शाहजहॉ के द्वारा निर्मित

संगीत :-

* बर्नी नामक लेखक ने लिखा है कि इस्लाम धर्म में संगीत प्रतिबंधित होने के बावजूद भी कैकूबाद के समय दिल्ली की गलियाँ संगीत से गूजं उठी।
* अलाउददीन खिलजी चूकि धर्म का राजनीतिक में प्रवेश पसन्द नही करता था इसलिए उसने नसीर खान, दक्षिण भारत के गायक गोपाल नायक और अमीर खुसरो को संरक्षण दिया। अमीर खुसरो ने भारतीय संगीत को सितार, वीणा तम्बूरा और मृदंग को तबले में परिवर्तित करने में योगदान दिया।

सिक्का :-

* कुतुबुद्दीन ऐबक ने इस्लामिक प्रभाव वाले देहली सिक्के जारी किए।
* इल्तुतमिश ने चांदी का अरबी सिक्का चलाया जिसे टंका कहा गया। तांबे के सिक्के को जीतल कहा गया।
* बलबन ने कम भार के चांदी के सिक्के चलाए जिसे मासा कहा गया।
* मुबारक शाह खिलजी एक मात्र शासक है जो सोने के सिक्के जारी करने के अलावा टंकाएँ- तलायें जारी करने का दावा किया है। किन्तु यह सिक्के प्राप्त नही हुए हैं।
* मोहम्मद बिन तुगलक ने एक प्रतीकात्मक सिक्का अदली चलाया जो कांसे का बना हुआ था।

विभिन्न शासकों के द्वारा स्थापित नवीन प्रशासनिक विभाग

1.) अलाउद्दीन खिलजी

दीवान-ए- मुस्तखराज - बकाएं भू-राजस्व की वसूली करने वाला विभाग

दीवाने वरीद - गुप्तचर विभाग

दीवाने रियासत - बाजार नियत्रंण विभाग

2.) मोहम्मद बिन तुगलक

दीवाने कोही - कृषि विभाग

दीवाने सियासत - राजनीतिक षड़यत्रो पर नजर रखने वाला विभाग

3.) फिरोजशाह तुगलक

दीवाने - बन्दगान - दासो से सम्बंधित विभाग

दीवाने - इस्तहाक - पेंशन विभाग

दीवाने - खैरात = गरीबों को दान देने की अनुशंसा करने वाला विभाग

दीवानें - इमारत - भवनो का निमार्ण करने वाला विभाग

दिल्ली सल्तनत की वित्त व्यवस्था

भूमि के प्रकार :-

1.) उसरी भूमि : यह विशुद्ध रूप से तुर्की मुसलमानो के नियंत्रण वाली भूमि ($\frac{1}{10}$ भाग भू राजस्व के रूप में)

2.) सुलटी भूमि - जिन पराजित लोगों ने तुर्की को विजेता के रूप में स्वीकृत कर लिया और मुसलमानों का धर्म स्वीकार किया उनकी भूमि सुलटी भूमि कहलायी। इन पर भू-राजस्व का 1/10 हिस्सा देना पड़ता था।

3.) खराजी भूमि - जो मुस्लिम राज्य में रह रहे है, इस्लाम धर्म को स्वीकार नही किया उनकी भूमि खराजी कहलाती थी इनसे उत्पादन का 1/3 - 1/2 भाग भू-राजस्व वसूल किया जाता था

राजकीय आय के अन्य स्त्रोत -

* जजिया - सैनिक सुरक्षा कर है जो इस्लाम राज्य में रहने वाले अन्य धर्म के लोगों से उनकी आर्थिक क्षमता के अनुसार वसूल किया जाता था।
  बच्चे, वृद्ध, अपंग, स्त्रियां और ब्राह्मण जजिया कर मुक्त थे किन्तु फिरोजशाह तुगलक ने ब्राह्मणों पर जजिया लगाया।
* खम्स या खुम्स - युद्ध लूट के रूप में जो प्राप्त होता था, इस्लामिक धर्म के अनुसार लूट का 4/5 भाग सैनिकों में वितरित किया जाता था और 1/5 भाग राज्य कोष में जमा किया जाता था।
  अलाउद्दीन खिलजी ने इस व्यवस्था को उलट दिया।
* जकात - मुस्लिमों से लिया जाने वाले धार्मिक कर (यह बाध्यकारी नही था)
* निसात - अगर निर्धारित सम्पत्ति से अधिक सम्पत्ति पायी जाती है जो उसके अनुपात में ही कर की वसूली।

* अलाउद्दीन खिलजी ने दो नवीन कर चरही और घरही (चारागाह और आवास कर) को लागू किया।
* फिरोजशाह तुगलक ने प्रचलित 23 करों को गैर इस्लामिक मानते हुए समाप्त कर दिया। हक्ब-ए-शर्ब (सिंचाई कर) जो उत्पादन का 1/10 भाग था उसकी वसूली उसने सिंचित प्रदेशों में की।

✓ लगान निर्धारण करने की प्रक्रिया -

1) नस्क पद्धति - भूमि पर लगी हुयी फसल के अनुमानित उत्पादन की मात्रा के आधार पर राज्य की मांग का निर्धारण करना।

2) बटाई पद्धति - 3 प्रकार की है।

a) खेत बटाई - भू-राजस्व के रूप में 1/3 भूमि बटाई।

b) लंक बटाई - फसलें कटने के बाद अन्न को साफ करने के बाद 1/3 बटाई।

c) रास बटाई - फसलों के बोझो का 1/3 प्राप्त करना।

3) मसाहत पद्धति - भूमि की माप और भूमि की उत्पादकता के आधार पर लगान का निर्धारण। अलाउद्दीन खिलजी ने लागू किया।

✓ न्यायिक प्रशासन - 4 स्त्रोत है।

1. कुरान - पैगम्बर साहब के द्वारा वर्णित विचार के आधार पर न्याय।
2. हदीस - पैगम्बर के वक्तव्य और शिक्षाओं के आधार पर न्याय।
3. इज्मा - अल्ला की इच्छाओं का विश्लेषण, मुजतहीदों (नैतिक विचारों का प्रसारण और संरक्षणकर्ता) के विश्लेषण पर आधारित न्याय।
4. कायस - तर्क पर आधारित न्याय

* यह न्याय प्रणाली गैर मुसलमानों पर लागु नही होती थी। उनके लिए अलग से कानून बनाए गये जिसे "जवाबित" कहा गया।
* धार्मिक न्यायालय का प्रधान सुद्र-उस-सुदुर होता था। और गैर धार्मिक न्यायालय का प्रधान काजी-उल-कजात कहलाता था यदि हिन्दू मामले न्यायालय के समक्ष आते थे तो उसमें ब्राह्मणों को भी सम्मिलित किया जाता था।

-: दिल्ली सल्तनत का राजनीतिक इतिहास :-

* कुतुबुद्दीन ऐबक को "लाख बक्श" (उन्मुक्त हाथों से दान देने वाला) कहा गया है। कभी भी सुल्तान की उपाधि धारण नही की बल्कि स्वयं को मलिक-खान-सिपहसालार कहता था। अपने नाम से खुतबा नही पढ़वाया और अपने नाम से सिक्का नही चलवाया।
* इल्तुतमिश ने "तुर्कान-ए-चहलगानी" नामक संस्था का गठन किया जिसमें उनके समर्थक 40 सदस्यों को शामिल किया जाता था। उसे बगदाद के खलीफा ने दासता से मुक्ति प्रदान कर दी थी।
* रजिया पहली शासिका है जो जनता के सहयोग से दिल्ली की गद्दी पर बैठी।
* नसिरूद्दीन मोहम्मद - इसे दरवेश शासक कहा गया है यह ऐसा शासक था जो कुरान की आयतों को लिखकर और उसे बेचकर अपनी आजीविका हासिल करता था। सारी शक्तियां बलबन के हाथों में थी।

* बलवन ने 'राजस्व का सिद्धान्त' प्रतिपादित किया। उसने अपने लिए 'नियामत-ए-खुदाई' (ईश्वर का प्रतिनिधि) और 'जिल्ले अल्लाह' (ईश्वर का प्रतिबिम्ब) कहा। अपनी उत्पत्ति को उसने पौराणिक 'अफरासियाब वंश' से जोड़ा। 'सिजदा' और 'पायबोस' की प्रथा शुरु की। दीवान-ए-अर्ज (सैनिक विभाग) की स्थापना
* बार-ए-जानदार ये अंगरक्षक होते थे।
* फारसी परम्परा (नौरोज) (Fire festival) प्रारम्भ किया।

(मूल्य)

अलाउददीन खिलजी ने बाजार नियन्त्रण का सिद्धान्त: उद्देश्य था सैनिको को कम मूल्य पर वस्तु प्रदान कराना। मुद्रास्फीति को रोकना।

* आन्तरिक और बाह्य व्यापार के लिए नीति निर्धारित करना, जन कल्याण। सार्वजनिक वितरण प्रणाली प्रारंभ की।
* सभी वस्तुओं का भाव निर्धारित किया जिसे जौब्ता कहा जाता था।
* शहना-ए-मण्डी: बाजार अधीक्षक की न्युक्ति की।
* दीवाने-रियासत: वाणिज्य विभाग का गठन किया। हर व्यापरी को इस विभाग में पंजीकरण कराना अति-आवश्यक था।
* आपातकालीन परिस्थितियों में उत्पन्न होने वाले खाद्यान्न संकट को दूर करने के झांईन (राजस्थान और दिल्ली) में उसने अन्नागारो का निमार्ण कराया था।
* स्थाई सेना का गठन किया उन्हे नगद में वेतन दिया। एक घुड़सवार सैनिक को 234 टका वार्षिक और एक अतिरिक्त घोड़ा रखने पर 78 टका अतिरिक्त देने की घोषणा की।
* घोड़े में दाग और हुलिया पद्धति को लागु किया।
* सिकन्दर-ए-सानी की उपाधि धारण करता था
* मंगोल के सर्वाधिक आक्रमण इसी के काल में हुए।
* बरीद-ए-मुमालिक (गुप्तचर विभाग का रक्षक) - खिलजी की सफलता का श्रेय इसी को दिया जाता

✓ मुबारक शाह खिलजी - घोषणाओं का बादशाह कहा जाता था पहला सुल्तान जिसने घोषित किया कि वह खलीफा भी है और सुल्तान भी । उसने घोषित किया कि उसने स्वर्ण सिक्के चलाए है।

✓ नसिरूद्दीन मोहम्मद शाह · गुजरात का एक ब्राह्मण था उसने इस्लाम धर्म को स्वीकार कर लिया भारत की गद्दी पर बैठने वाला यह एक मात्र भारतीय मुसलमान था।

✓ ग्यासुद्दीन तुगलक - इसे 'मलिक-उल गाजी' की उपाधि दी गई थी। गाजी की उपाधि धारण करने वाला एक मात्र सुल्तान था - जिसका अर्थ काफिरो का बध करने वाला ।

* सिंचाई हेतु नहर का निर्माण करने वाला पहला मुस्लिम शासक भू-राजस्व की दर 1/3 कर दिया
* दक्षिणी राज्यों को पहली बार प्रत्यक्ष नियन्त्रण में लाया गया
* प्रसिद्ध सुफी संत निजामुद्दीन औलिया ने गयासुद्दीन तुगलक के लिए कहा था कि - दिल्ली बहुत दुर है।

✓ मोहम्मद बिन तुगलक – सर्वाधिक विलक्षण विद्वान, अरबी-फारसी भाषा का ज्ञान, गणीतज्ञ, दर्शनशास्त्र और औषधीशास्त्र ज्ञान के विभिन्न शाखाओं की समझ थी।

* इसी के काल में इब्नबतुता (मोरक्को अफ्रीकी यात्री) भारत आया, मुहम्मद बिन तुगलक ने इसे दिल्ली का काजी नियुक्ति किया था इब्नबतुता ने 'रेहला' नामक पुस्तक में अपने यात्रा वृन्तांतों का वर्णन किया। (डाक व्यवस्था का विवरण) (दौलताबाद)
* 1327 में अपनी राजधानी दिल्ली से देवगीरी करता है इसका वर्णन इसामी ने किया है।

* सांकेतिक मुद्रा का प्रचलन किया - चांदी के सिक्के (टंके) के स्थान पर कांसे के सिक्के (टंके) का प्रयोग किया – (1330 में)
* एडवर्ड थामस नामक इतिहासकार ने मोहम्मद बिन तुगलक को बनियों का राजकुमार कहा।
* दोआब में कर वृद्धि - मो. बिन तुगलक के काल में इस क्षेत्र में भयानक अकाल पड़ा। दोआब का क्षेत्र सर्वाधिक उपजाऊ क्षेत्र था। सल्तनत की आर्थिक व्यवस्था खराब न हो इसलिए मु. बिन तुगलक ने इस क्षेत्र में कर की मात्रा 1/10 से 1/20% बढ़ा दी। परिणाम स्वरूप यहां के किसानों ने विद्रोह कर दिया।
* मोहम्मद बिन तुगलक ने दिवान-ए-अमीर-ए-कोही (कृषि विभाग) की स्थापना की
* इसने सिक्को पर खलीफा का अंकन कराया क्योंकि उलेमा (धर्मगुरु) मोहम्मद बिन तुगलक के खिलाफ थे।
* मुसलमानों पर लगने वाले सारे कर समाप्त कर दिये गये। हिन्दुओं के त्योहारों में हिस्सा लेने वाला प्रथम शासक
* खुरासान अभियान - मध्य एशिया मे अवस्थित इस क्षेत्र को जीतने के लिए मोहम्मद बिन तुगलक ने 3 लाख 70 हजार अतिरिक्त सैनिकों की भर्ती की, उन्हे विशेष प्रशिक्षण दिया। भारी हिमपात के कारण मार्ग अवरुद्ध हो गया और इसके उपरान्त अबुसईद नामक एक शक्तिशाली शासक का उदय हुआ।
* कराचिल अभियान - यह भारत एवं चीन के मध्य हिन्दु शासक के अधिन था। बर्नी ने लिखा है कि 10 लाख सैनिको को इसने इस अभियान पर लगाया और वह सफल रहा। एक मात्र उसका सफल अभियान था।
* "सुल्तान को प्रजा से और प्रजा को सुल्तान से मुक्ति मिल गई" — बदांयुनी ने कहा – मो. बिन तुगलक की मृत्यु पर।
* इसके काल में सम्पूर्ण दक्षिण भारत (विजयनगर, बहमनी, मदुरै) स्वतंत्र हो गया।

फिरोजशाह तुगलक

* केवल चार कर जजिया, जकात खराज और खम्स वसूल किये
* सैनिकों को भूमि अनुदान के द्वारा भुगतान किया जाने लगा जो 'इक्तदार' कहलाता था और यह अनुदान वंशानुगत कर दिया गया।
* इसने दो प्रकार के विशेष कारखाने रताबी (खाद्य उत्पादक) और गैर-रताबी (अन्य वस्तुओं के उत्पादक उद्योग) स्थापित किये जिसकी संख्या 36 थी।
* अहले मुहासिब (लेखा परीक्षक) और उमाल (कारखाने के कर्मचारी) की नियुक्ति की। रोजगार दफ्तर खुलवाया
* दिल्ली में इसने एक उद्यान लगाया जिससे प्रतिवर्ष एक लाख 80 हजार टंका की आय होती थी जो उसकी आय का मुख्य साधन था
* इसने 23 प्रकार के गैर-इस्लामिक करों को प्रतिबंधित कर दिया।
* फुतुहात-ए-फिरोजशाही नामक पुस्तक में परोपकार की अपनी मूल अवधारणा की व्याख्या की
* दिवान-ए-खैरात की स्थापना की - मुसलमान, अनाथ स्त्रियां एवं विधवाओं को आर्थिक सहायता देने के लिए
* जौनपुर की स्थापना (अपने भाई जौना खां की स्मृति में)
* दिल्ली में एक अस्पताल (दार-उल-शफा) स्थापित किया
* टोपरा तथा मेरठ से दो अशोक स्तम्भ लेख दिल्ली लाया था।
* अनुवाद विभाग की स्थापना - जिसमे हिन्दु-मुस्लिम सम्प्रदाय के लोगों में एक दुसरे के विचारो की समझ बेहतर हो सके।
* राज्य के खर्च पर हज की व्यवस्था करने वाला पहला शासक
* सर्वप्रथम लोकनिर्माण विभाग की स्थापना की।
* हक्क-ए-सर्ब (सिचाई कर) लगाने वाला प्रथम सुल्तान था।
* इसके दरबार में सबसे अधिक गुलाम थे — उनकी देखभाल के लिए पृथक विभाग (दीवान-ए-बंदगान) का गठन किया था।

दिल्ली की राजगद्दी पर अफगान शासकों के शासन का क्रम
बहलोल खान लोदी – सिकन्दर लोदी – इब्राहिम लोदी

* लोदी वंश की स्थापना – बहलोल लोदी
* जौनपुर नगर – 'भारत का शिराज' कहा जाता था

सिकन्दर लोदी – आगरा की स्थापना तथा राजधानी बनायी।

* नाप का पैमाना 'गज-ए-सिकंदरी' का प्रारंभ किया
* हिन्दुओं पर जजिया कर पुनः लगाया।
* कृषि को विकसित करने के लिए 'महसूल' (बिक्री कर) को वापस ले लिया।
* इसने 'मियाँ भुआ' के द्वारा संस्कृत के औषधि शास्त्र को फारसी में रूपान्तरित कराया — फरहंगे सिकन्दरी
* उसके समय में गायन विद्या के एक श्रेष्ठ ग्रन्थ "लज्जत-ए-सिकन्दरशाही" की रचना हुयी।
* गुलरुखी उपनाम से कविताएं लिखता था।
* कट्टर इस्लाम समर्थक था।
* इसने अनाज से जकात (आयकर) समाप्त कर दिया।
* 1518 में खातोली का युद्ध – महाराणा सांगा और इब्राहिम लोदी के बीच – इब्राहिम लोदी पराजित

कला एवं स्थापत्य –

* अमीर खुसरो ने दिल्ली को हजरत-ए-दिल्ली कहा
* मध्यकालीन संगीत परम्परा के संस्थापक अमीर खुसरो
* इल्तुतमिस के समय चीन से चित्रकार भारत आये थे।
* भारत की पहली तुर्क मस्जिद कुव्वत-उल-इस्लाम (दिल्ली) इसका निमार्ण ऐबक ने विष्णु मंदिर के ऊपर कराया।
* अलाई दरवाजा – अलाउद्दीन खिलजी ने निमार्ण कराया। इसका निमार्ण लाल पत्थरों तथा संगमरमर के द्वारा हुआ।
* कुतुबमीनार का निमार्ण कुतुबुद्दीन ऐबक ने प्रारम्भ किया – इल्तुतमिश के काल में इसका निमार्ण पूर्ण हुआ – सूफी ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी के नाम पर इसका नाम कुतुबमीनार – गोलाकार, पंचमंजिली इमारत – इसके पांचवी मंजिल का निमार्ण – फिरोजशाह तुगलक ने किया।
* भारत का प्रथम मकबरा जो शुद्ध इस्लामी शैली में बना है – बलबन का मकबरा (दिल्ली में किला रायपिथौरा के समीप)
* चित्तौड़ का कीर्ति स्तंभ – राणा कुंभा के शासनकाल में
* कीर्ति स्तंभ प्रशस्ति के रचयिता – अत्रि और महेश
* मोहम्मद बिन तुगलक ने जहाँपनाह नगर की स्थापना की एवं दिल्ली में आदिलाबाद का किला बनवाया।
* प्रथम अष्टभुजाकार मकबरा – खान-ए-जहाँ तेलंगानी जो फिरोजशाह तुगलक के काल में निर्मित है। इसका निमार्ण खाने-जहाँ जूनाशाह ने किया।
* अढाई दिन का झोपड़ा – कुतबुद्दीन ऐबक (अजमेर में)
* जामा मस्जिद और सुल्तानगढ़ी – इल्तुतमिश
* फतेहपुर सिकरी – अकबर
* शेख निजामुद्दीन औलिया का मकबरा – मुहम्मद बिन तुगलक

* कुव्वत-उल-इस्लाम – (दिल्ली में) कुतुबुद्दीन ऐबक ने
  अटाला मस्जिद – (जौनपुर)
  जहाज महल – (मालवा)
  जामा मस्जिद – (गुलबर्गा)

* अमीर खुसरो – तुतिये हिन्द (भारत का तोता) (जन्म-स्टा मे)
  मध्यकालीन संगीत परम्परा के आदि संस्थापक

* 'किताब-उल-हिन्द' रचना – अलबरूनी ने (अबू रेहान)
  अमीर खुसरो का जन्म कांसगज (कांशीरामनगर) जिले के पटियाली नामक स्थान पर हुआ।

* खड़ी बोली के विकास में अग्रगामी की भूमिका निभाई।

* दिल्ली के 7 सुल्तानों का शासनकाल देखा – अमीर खुसरो और शेख निजामुद्दीन औलिया

* अमीर खुसरो – अलाउद्दीन खिलजी के दरबारी कवि था।
  यह कवि, इतिहासकार एवं संगीतज्ञ भी था।

* सबक-ए-हिन्दी या हिन्दुस्तानी शैली के जन्मदाता थे।
  हिन्दी और फारसी दोनो का ज्ञान था।

* संगीत यंत्र 'तबला' का प्रचलन – अमीर खुसरो
  (सितार)

* राणा कुंभा संगीत के साथ-साथ साहित्य एवं कला का भी पोषक था। (कीर्ति स्तंभ का निर्माण)

* फिरोजशाह तुगलक ने अपना संस्मरण – 'फुतुहात ए फिरोजशाही' के नाम से लिखा।

* फारसी भाषा को दिल्ली सुल्तानो ने संरक्षण प्रदान किया

* तबकात-ए-नासिरी — मिनहाज-उस-सिराज (लेखक)

* लोदी काल को मकबरो का काल कहा जाता है।

उत्तर भारत एवं दक्कन के प्रांतीय राजवंश

* दक्कन में बहमनी साम्राज्य की स्थापना – (1347) अलाउद्दीन हसन बहमन शाह (जफर खां / हसन गंगू) ने किया।
* गुलबर्गा को राजधानी बनाया उसका नाम – अहसानाबाद रखा। इसने अपने साम्राज्य को चार प्रान्तों में विभाजित किया – गुलबर्गा, दौलताबाद, बरार, बीदर
* गुलबर्गा सबसे महत्वपूर्ण था – इसमें बीजापुर भी सम्मिलित था। हिन्दुओं से जजिया न लेने का आदेश दिया।
* अनुयायियों को पद और जागीर प्रदान करने की नई प्रथा प्रारम्भ की।

* बहमनी साम्राज्य के विघटन से 5 प्रान्तिय राज्य उत्पन्न हुए –

✓ बीजापुर – आदिलशाही वंश की स्थापना
इब्राहिम आदिल शाह पहला सुल्तान – फारसी के स्थान पर हिन्दवी (दक्कनी उर्दू) को राजभाषा

इब्राहिम आदिल शाह II – महान विद्या प्रेमी विद्या संरक्षक जगतगुरु की उपाधि से सम्बोधित किया गया – उसकी प्रजा ने

✓ अहमद नगर — संस्थापक अहमद मलिक – मृत्यु के बाद बुरहान निजामशाह शासक

हुसैन निजाम शाह शासन काल को युगान्तकारी युग के रूप में

चांद बीबी ने अहमद नगर की राजनीति में बड़ी स्मरणीय भूमिका निभाई। (अलि आदिलशाह की पत्नी थी)

✓ गोलकुंडा – कुतुबशाही वंश – संस्थापक (कुलीशाह)
इब्राहीम पहला शासक जिसने कुतबशाह की उपाधि धारण की।
साहित्यकारों का बौद्धिक क्रिड़ा स्थल – (अभी हैदराबाद में है)

बरार – फतहउल्ला इमादशाह (हिन्दु से मुसलमान बना)
बीदर – बरीद शाही वंश की स्थापना – अमीर अली बरीद
इसे दक्कन की लोमड़ी कहा जाता
* बहमनी साम्राज्य के शासक हुमायु को दक्कन का नीरो कहते है।
* बीजापुर के शासक इब्राहिम आदिल शाह को अबला बाबा, गरीबो का मित्र तथा गोल गुम्बद में इन्ही का मकबरा है।
* अहमद नगर के शासक मलिक अम्बर ने रैयतबाड़ी प्रथा का प्रारम्भ किया।
* गोलकुण्डा के शासक मोहम्मद कुली ने हैदराबाद नगर की स्थापना की।

कश्मीर – शाहमीर वंश की स्थापना – (शाहमीर ने)
वास्तविक संस्थापक – शिहाबुद्दीन
* सिकन्दर इस वंश का महत्वपूर्ण शासक था। इसी के काल में तैमूर ने भारत पर आक्रमण किया।
* इसके शासनकाल में मंदिर नष्ट किये और सोने चांदी की मूर्तियाँ शाही टकसाल में गलाकर सिक्के में परिवर्तित
* सुल्तान जैनुल आबिदीन – काश्मीर में जजिया कर पर रोक लगायी तथा गौ-हत्या पर रोक
* कुतुब उपनाम से फारसी में कविताएं लिखता था
* महाभारत तथा राजतरंगिणी का फारसी में अनुवाद करवाया
काश्मीर के लोगो ने इसे बुडशाह कहा
* उदार नीति के कारण उसे काश्मीर का अकबर और मूल्य नियंत्रण व्यवस्था के कारण काश्मीर का अलाउद्दीन खिलजी कहा जाता
* वुलर झील में जैना लंका नामक द्वीप का उसी ने निर्माण करवाया
शिकायतनामा ग्रन्थ की रचना की।

'मलिक-उश-शर्क' तथा 'ख्वाजा-ए-जहां' की उपाधि दी— मु॰ तुगलक द्वितीय ने

इब्राहिम शाह शर्की ने स्वयं सिराज-ए-हिन्द की उपाधि धारण की
अटाला मस्जिद — जौनपुर में (सांस्कृतिक उन्नति के कारण)
भारत का शिराज कहा जाता है।

मेवाड़ के राणा कुम्भा ने चित्तौड़ में विजय स्तम्भ बनवाया जबकि मालवा के शासक महमूद खलजी ने सात मंजिलो वाला स्तम्भ स्थापित किया।

होयसल वंश की राजधानी — द्वारसमुद्र थी (हैलेबिडु कर्नाटक राज्य के हासन जिले में स्थित है) (वर्तमान नाम)

हैलेबिडु के वर्तमान मंदिरो में होयसलेश्वर का प्राचीन मंदिर विख्यात है — निमार्ण नरसिंह प्रथम ने कराया — (शिल्पकार केदरोज की देखरेख में

मालवा - बाजबहादुर
गोलकुंडा - कुतुबशाह
गुजरात - सुल्तान मुजफ्फर शाह

काकतीय वंश - वारंगल

यादव वंश - देवगिरि

पाण्ड्य वंश - (प्रारम्भिक कोरकई) मदुरा (बाद में)

होयसल - द्वार समुद्र

* मध्यकालीन भारतीय राज्यों में चपंक (चंबा) तथा कुलूत (कुल्लू) का सम्बंध हिमाचल प्रदेश से है।

दुर्गर - जम्मू में स्थित

चपंक, दुर्गर और कुलूत राजपूतों से सम्बंधित है।

* 'पोलिगार' एक सामंतवादी उपाधि थी दक्षिण भारत के नायक शासको द्वारा 16वीं से 18वीं शताब्दी के दौरान नियुक्त किए गये क्षेत्रिय प्रशासकीय और सैन्य नियंत्रको के एक वर्ग को प्रदान की गई थी।

विजयनगर साम्राज्य —

* 1336 ई. में हरिहर और बुक्का के द्वारा स्थापित किया गया। इसमें संत विद्यारण्य की भूमिका अहम थी।
* हरिहर प्रथम ने कृष्णा नदी की सहायक नदी (तुंगभद्रा) के दक्षिणी तट पर एक नये नगर विजयनगर की स्थापना की। कृष्णा नदी से दक्षिण की समस्त भूमि – भगवान विरूपाक्ष की है
* इसकी प्रारंभिक राजधानी – अनेगोंडी थी बाद में विजयनगर स्थानान्तरित की गई।
* विजय नगर साम्राज्य की अन्य राजधानी – पेनुगोंडा, चन्द्रगिरि

विजयनगर साम्राज्य के साहित्यिक स्त्रोत –

आमुक्तमाल्यद - कृष्ण देव राय द्वारा रचित। यह तेलगु भाषा में है इसका विषय राजनीतिक है।

जाम्बवन्ती कल्याण - कृष्णदेव राय संस्कृत में लिखित

मदुरा विजयम - बुक्का की बहु गंगा देवी द्वारा संस्कृत भाषा में लिखा गया है।

पाण्डुरंग महात्म्य - पम्मकृष्ण द्वारा तेलगु भाषा में

मनुचरितम - संस्कृत में अल्लासनपेदन्ना द्वारा

* कृष्ण देव राय का शासनकाल विजयनगर में साहित्यिक का युग माना जाता – (तेलगु साहित्य का स्वर्ण युग)
* कृष्ण देव राय ने आन्ध्र भोज की उपाधि धारण की थी। उसके दरबार में अष्ठ दिग्गज थे (तेलगु के आठ महान विद्वान व कवि) इनमें पेड्डाना सर्वप्रमुख था जो संस्कृत और तेलगु दोनो भाषाओं का ज्ञाता था। प्रमुख रचना – स्वारोचीषसम्भव, मनुचरित
* प्रसिद्ध हजारा मंदिर – विजयनगर में (कृष्णदेव राय के शासनकाल)
* वैदिक ग्रन्थों के भाष्यकार सायण को आश्रय प्राप्त था – विजय नगर के राजाओं का

* तालीकोटा का युद्ध - बहमनी राज्यों की संयुक्त सेनायें (बीजापुर अहमदनगर तथा गोलकुंडा की संयुक्त) ने विजयनगर को पराजित किया। इस संयुक्त सेना में केवल बरार शामिल नहीं था। (1565 में)

* राजा वोडियार ने मैसूर राज्य स्थापना की तब विजयनगर साम्राज्य का शासक - वेंकट II (अंतिम वंश) → रंग प्रथम के बाद बना। चन्द्रगिरि को अपना मुख्यालय बनाया।

* विजयनगर साम्राज्य की वित्तीय व्यवस्था की मुख्य विशेषता - भूराजस्व थी। 'शिष्ट' नामक कर राज्य की आय का प्रमुख स्रोत

* हम्पी के खंडहर (वर्तमान उत्तरी कर्नाटक) विजयनगर साम्राज्य की प्राचीन राजधानी का प्रतिनिधित्व करते है। इस काल में बना विरूपाक्ष मन्दिर यहीं है। हम्पी यूनेस्को की विश्व-विरासत स्थलो की सूची में सम्मिलित है।

* बुक्का प्रथम ने 1374 में चीन के सम्राट के पास अपना राजदूत भेजा था।

* प्रसिद्ध विजय विट्ठल मंदिर जिसके 56 तक्षित स्तम्भ संगीतमय स्वर निकालते है— हम्पी में स्थित है (निर्माण कृष्णदेवराय)

≈ सिक्का :-

स्वर्ण सिक्को को वाराह और पैगोडा कहा जाता था।
पुर्तगाली सिक्का जो चांदी का था उसे कुडजौंगे कहा गया।
इटली के सिक्के को ड्यूकेट और फ्लोरिन कहा जाता था।

≈ विदेशी यात्रियों का आगमन -

नूनीज - पुर्तगाली यात्री जो अच्युतदेव राय नामक शासक के शासनकाल में आया।

अब्दुर रज्जाक - ईरानी यात्री जो देवराय (द्वितीय) के शासन काल में आया

निकीतन - रूसी यात्री, जो बहमनी राज्य मे आता है किन्तु बेनीहट्टी (राक्षसतंगिणी) के युद्ध के समय में विजय-नगर से भी सम्पर्क स्थापित करता है। यह युद्ध विजयनगर और बहमनी राज्य के बीच होता है।

निकोलोकोण्टी - इटली का यात्री, जो देव राय प्रथम के समय भारत आया।

डोमनिगोपायस - पुर्तगाली यात्री, कृष्ण देव राय के समय

बारबोसा - इटली का यात्री, कृष्ण देव राय के समय

इब्नबतूता - मोरक्को का यात्री, जिस समय विजयनगर का निर्माण हो रहा था वह विजयनगर उपस्थित था।

* विजयनगर साम्राज्य के दो नवीनतम प्रशासनिक व्यवस्थाएं
  1.) नायंकर व्यवस्था
  2.) आयंगर व्यवस्था

(क)
- भारत का शिराज - जौनपुर
- बहमनी राज्य की स्थापना - अलाउद्दीन हसन (1347 में)
- सर्वप्रथम जजिया कर समाप्त किया - जैन-उल-आबेदिन
- काश्मीर का अकबर - जैन-उल-आबेदिन

(imp)

तारीख-ए-हिन्द – अलबरूनी

तारीख-ए-दिल्ली – खुसरो

रेहला – इब्नबतुता

तबकात-ए-नासिरी – मिनहाज

तारीख-ए-मुबारकशाही – याहिया-बिन-अहमद

तारीख-ए-फीरोजशाही – जियाउद्दीन बरनी

ताजुल मासिर – हसन निजामी

दस्तार बन्दान — उलेमा (सल्तनत काल में ऊंचे धार्मिक और न्यायिक पदों पर बैठे व्यक्तियों का समूह)

मध्यकालीन भारत में महत्तर और पट्टकिल पदनाम – शिल्प श्रेणीयों के प्रमुख के लिए प्रयुक्त होते है।

(imp)

महेन्द्र वर्मन — मत्तविलासप्रहसन

भोजदेव – समरांगण सुत्रधार

सोमेश्वर – मानसोल्लास

कृष्ण देव राय – अमुक्तमाल्यद

(imp) दीवान-ए-अर्ज – बलबन (सैनिक विभाग)

दीवान-ए-मुस्तखराज- अलाउद्दीन खिलजी

मुगल साम्राज्य

बाबर - जन्म (फरगना में)

पुरा नाम - जहीरूद्दीन मोहम्मद बाबर

चगताई राजवंश की स्थापना (तुर्की नस्ल)

बाबर के साम्राज्य में सम्मिलित क्षेत्र - काबुल, पंजाब, आधुनिक उ०प्र० का क्षेत्र

1507 में 'पदशाह' की उपाधि — इससे पूर्व मिर्जा की पैतृक उपाधि धारण करता था।

सर-ए-पुल का युद्ध -(1501) शैबानी खान ने बाबर को पराजित किया

पानीपत का प्रथम युद्ध —(1526) इब्राहिम लोदी को पराजित

विजय का मुख्य कारण - उसका तोपखाना & कुशल सैन्य नेतृत्व तुलगुमा युद्ध पद्यति (उजबेको की युद्ध नीति) तथा तोपो को सजाने में उस्मानी विधि का प्रयोग किया।

बाबर को 'कलन्दर' अपनी उदारता के कारण

खानवा का युद्ध —(1527) 17 मार्च - राणा सांगा पराजित

इस युद्ध में जेहाद की घोषणा की — सैनिको को मनोबल बढ़ाने के लिए मुसलमानो पर लगने वाले — तमगा नामक कर की समाप्ति की घोषणा।

विजय के बाद गाज़ी की उपाधि धारण की।

चंदेरी का युद्ध - (29 जनवरी 1528) मेदिनीराय पराजित

घाघरा का युद्ध - (6 मई 1529) बिहार, बंगाल की संयुक्त सेना को पराजित किया।

बाबर को बागों को लगाने का बड़ा शौकिन था। आगरा में बाग लगाया — नूरे अफगान — अब आराम बाग कहा जाता

1530 में मृत्यु के बाद उसे यहीं दफनाया गया

अयोध्या स्थित बाबरी मस्जिद का निर्माण — बाबर का सेनानायक मीर बाकी ने कराया।

बाबर की पुस्तक बाबरनामा में 5- मुगल साम्राज्य (बगांल, दिल्ली मालवा, गुजरात एवं बहमनी राज्यो) तथा दो हिन्दु साम्राज्य मेवाड़ एवं विजयनगर का उल्लेख है।
कृष्णदेव राय को समकालीन भारत का सर्वाधिक शक्तिशाली राजा कहा।
बाबरनामा – (तुजुक-ए-बाबरी)- तुर्की भाषा में
रिसाल-ए-उसज (खत-ए-बाबरी) की रचनी भी की।
मुबइयान नामक पद्य शैली का विकास

बाबर माता की ओर से मंगोल का वशंज तथा पिता की ओर से तैमुर का वशंज था। सत्तारूढ़ होते ही तैमुरी राजवंश की स्थापना भी की।

हुमायूं – बाबर के 4 पुत्रों (हुमायूँ, कामरान, अस्करी और हिन्दाल) में हुमायूँ सबसे बड़ा – 23 वर्ष की आयु में सिंहासन पर
भाइयो में साम्राज्य का विभाजन – असफलता का मुख्य कारण
लेनपूल ने लिखा – "हुमायूं की असफलता - उसकी सुन्दर परन्तु विवेक-रहित दयालुता थी"
हुमायूं का पहला मुकाबला अफगानो से 1532 में दोहरिया नामक स्थान पर – अफगान पराजित – देवरा का युद्ध
चौसा का युद्ध - हुमायूँ एव शेरखां (शेरशाह) के बीच 29 जून 1539 हुमायूं पराजित
इसके बाद शेरखां ने शेरशाह की उपाधि धारण किया।
कन्नौज का युद्ध – (बिलग्राम का युद्ध) - हुमायूँ और शेरशाह के बीच हुमायूं परास्त हुआ — (मई 1540 में)
हुमायूँ को अबुल फजल ने इन्सान-ए-कामिल कहा
लेनपूल ने कहा – हुमायूं जीवनभर लड़खड़ता रहा और लड़खडाते हुए अपनी जान दे दी।

शेरशाह सूरी -

हजरते-आला की उपाधि ग्रहण की — 1529 में नुसरतशाह को पराजित करने के बाद

द्वितीय अफगान साम्राज्य की स्थापना की – उत्तर भारत मे

रोहतासगढ़ नामक एक सुदृढ़ किला बनवाया – अपनी उत्तरी पश्चिमी सीमा की सुरक्षा के लिए

कलिंजर अभियान शेरशाह का अन्तिम अभियान था – यहाँ इसकी मृत्यु हो गयी।

"मात्र मुट्ठी भर बाजरे के चक्कर में मैंने अपना साम्राज्य खो दिया होता" – शेरशाह सूरी मारवाड़ के युद्ध में राजपूतों के शौर्य पराक्रम से प्रभावित होकर

शेरशाह का मकबरा — सासाराम में - जिसके बारे में यह प्रसिद्ध है कि वह बाहर से मुस्लिम एवं अन्दर से हिन्दु स्थापत्य का प्रतिक रहा।

रैयतवाड़ी लगान व्यवस्था — मुल्तान को छोड़ सभी राज्यों में लागु

उत्पादन के आधार पर भूमि को 3 श्रेणीयों में बांटा– अच्छी, मध्यम खराब

भूमि निर्धारण के लिए 'राई' को लागु करवाया

लगान नकद या जिन्स (अनाज) दोनो रूप में देने की छुट थी।

भूमि मापन के लिए सन की डंडी का प्रयोग

किसानो को जरीबाना (सर्वेक्षण शुल्क) — 2.5% एव महासिलाना (कर संग्रह शुल्क) – 5.0% देना पड़ता था।

पट्टा एवं कबूलियत पत्र की व्यवस्था कृषको की मदद के लिए

अत्यन्त लोकप्रिय होने के कारण — सुल्तान-उल-अदल की उपाधि धारण कर रखी थी।

लगान सम्बंधित मुकदमों का निर्णय — मुंसिफ (परगने में) मुंसिफ-ए-मुसिफान (सरकारों में) करते थे।

सड़क एवं सरायों का निर्माण —
सराय की देखभाल के लिए — शिकदार नामक अधिकारी → इनकी देखभाल अमीन-ए-बंगाला / अमीन-ए-बंगाल नियुक्त किया।

शेरशाह के समय शुद्ध चांदी का 'रुपया' (180 ग्रेन) और तांबे का दाम (380 ग्रेन) चलाया।

23 टकसाले थी — सिक्को पर शेरशाह का नाम व पद अरबी या नागरी लिपि में अंकित होता था।

जायसी ने पद्मावत की रचना की — शेरशाह के काल में

दिल्ली की किला-ए-कुहना मस्जिद का निर्माण

घोड़ो को दागने की प्रथा तथा सैनिकों का हुलिया लिखे जाने की प्रथा को अपनाया था।

स्मिथ ने रुपये के बारे में लिखा — यह रुपया वर्तमान ब्रिटिश मुद्रा-प्रणाली का आधार है।

अब्बास खां — बुद्धिमत्ता और अनुभव में शेरशाह दूसरा हैदर था।

(ग्र) अपने पति हुमायूं के लिए मकबरे का निर्माण कराया — हाजी बेगम ने - दिल्ली (दीन पनाह) यह मकबरा भारतीय-फारसी वास्तुकला शैली का उदाहरण है।

अकबर   जन्म - अमरकोट के राणा वीरसाल के महल में 15 oct 1542 ई० को

राज्याभिषेक बैरम खाँ की देख-रेख में — 14 Feb 1556 को मिर्जा अबुल कासिम ने किया - पंजाब (गुरुदासपुर जिला)- कालानौर में अकबर ने बैरम खाँ को अपना वजीर नियुक्त कर उसे खान-ए-खाना की उपाधि प्रदान की थी।

पानीपत का द्वितीय युद्ध - (5 Nov 1556)

अकबर	Vs	मो० आदिलशाह सूर
वजीर - बैरम खाँ		वजीर - हेमू
(विजय) ✓		हेमू - विक्रमादित्य की उपाधि धारण करने वाला भारत का 14-वां शासक

मक्का जाते समय — बैरम खाँ की हत्या

अकबर ने दास प्रथा (1562), तीर्थयात्रा कर (1563) और जजिया कर (1564) समाप्त कर दिया।

अकबर ने सबसे पहला आक्रमण — 1561 में मालवा के शासक बाज बहादुर के उपर किया।

अकबर ने चित्तौड़ विजय के उपलक्ष्य में फतहनामा जारी किया था।

गुजरात विजय के उपलक्ष्य में फतेहपुर सीकरी में बुलन्द दरवाजा बनवाया तथा इसी युद्ध के समय अकबर ने पहली बार समुद्र दर्शन किया तथा पुर्तगाली से भेंट किया

1581 में काबुल को जीतकर काबुल की धरती पर राज करने वाला भारत का प्रथम शासक

1581 — अकबर के शासनकाल का सर्वाधिक संकटपूर्ण वर्ष था।

अकबर की दक्षिण नीति मूलरूप से साम्राज्यवादी थी।

अकबर ने दक्षिण के राज्यों में खानदेश, अहमद नगर एव असीरगढ़ की जीता था।

बलुचियों के विद्रोह के दौरान बीरबल की मृत्यु हुयी थी।
1576 ई. हल्दी घाटी युद्ध में अकबर ने महाराणा प्रताप को हराया
× सलीम के इशारे पर ओरछा के बुन्देला सरदार वीर सिंह ने अबुल फजल की हत्या कर दी थी।
अकबर ने गुजरात को जीतने के बाद राजा टोडरमल को लगान व्यवस्था का उत्तरदायित्व सौंप दिया।
अकबर की धार्मिक नीति का मूल उद्देश्य - 'सार्वभौमिक सहिष्णुता'
1575 ई. में अकबर ने फतेहपुर सिकरी में इबादतखाना (प्रार्थना भवन) की स्थापना किया — 1578 में इसे धर्म संसद के रूप में परिवर्तित कर दिया
अकबर ने 1579 ई. में महजरनामा (धर्म के मामले में सर्वोच्च व्यक्ति) जारी करवाया। इसके बाद अकबर ने सुल्तान-ए-आदिल या इमाम-ए-आदिल की उपाधि धारण की।
1582 में अकबर ने दीन-ए-इलाही नामक पंथ की शुरुआत की। जिसका प्रधान पुरोहित अबुल-फजल था। बीरबल एक मात्र हिन्दु था जिसने इसे स्वीकार किया (मूल नाम - महेशदास)
विन्सेन्ट स्मिथ ने दीन-ए-इलाही को अकबर की बहुत बड़ी राजनीतिक भूल कहा था।
1583 में इलाही संवत की शुरुआत
अकबर ने झरोखा दर्शन, तुलादान तथा पायबोस जैसी पारसी परम्परा को शुरू किया।
अकबर ने सिखगुरु रामदास को 500 बीघा जमीन प्रदान की। यहां अमृतसर नगर बसा और स्वर्ण मंदिर का निर्माण कराया गया।
फतेहपुर सीकरी निर्माण का खाका - बहाउद्दीन ने तैयार किया ~~था~~ था।
अकबर के दरबार में ईसाइयों का जेस्सुइट मिशन तीन बार आया था।
1580 ई. में प्रथम जेस्सुइट मिशन का नेतृत्व - फादर एकाबीवा ने किया।

अकबर ने सतीप्रथा को प्रतिबन्धित किया, विधवा विवाह को कानूनी मान्यता प्रदान की। अकबर के समय उम्र सीमा-(13-16) तथा (9-14 वर्ष) थी।

इबादत खाने में आमंत्रित धर्माचार्य –

हिन्दू धर्म – देवी एवं पुरुषोत्तम

जैन धर्म – हरिविजय सूरि (जगत गुरु)
जिनचन्द्र सूरि (युग प्रधान)

पारसी धर्म – दस्तुर मेहर जी राणा (200 बीघा जमीन दिया)

इसाई धर्म – फादर एकाबीवा और मोंसेरात

अकबर की लोकप्रियता के कारण – मनसबदारी प्रथा, धार्मिक नीति भू-राजस्व व्यवस्था, सामाजिक सुधार, मुद्रा व्यवस्था, प्रान्तीय शासन, लगान व्यवस्था आदि

प्रबुद्ध निरकुंश शासक – अकबर

अकबरकालीन सैन्य व्यवस्था – मनसबदारी ⇒ मंगोल की प्रचलित प्रणाली से उधार

अकबर के शासन काल में पुनर्गठित केन्द्रीय प्रशासन तंत्र के अन्तर्गत मीर बख्शी मुख्यतः सैन्य विभाग का प्रमुख था।

अकबर ने आज्ञा दी थी कि आदमी को एक ही स्त्री से विवाह करना चाहिए और वह तभी दुसरा विवाह कर सकता है जब उसकी पहली पत्नी बन्ध्या हो।

अकबर द्वारा दीवान का पूर्णरूपेण दर्जा दिया जाने वाले प्रथम व्यक्ति था – मुजफ्फर खाँ तुरबती ('दीवान' आर्थिक मामलों एवं राजस्व का सर्वोच्च अधिकारी होता था)

जाब्ती प्रणाली – भु-राजस्व वसूली के लिए अकबर के शासन काल में

टोडरमल – भू-राजस्व (मालगुजारी सुधारों से सम्बंधित) शेरशाह और अकबर के मध्य नैरन्तर्य की कड़ी थी।

आइने-दहसाला (टोडरमल बंदोबस्त) – प्रणेता टोडरमल

सुलह-ए-कुल का सिद्धान्त – अकबर ने
(सार्वभौम शान्ति तथा भाईचारा की अवधारणा)

1580 में जौनपुर के धर्मगुरु ने सभी मुस्लिमों को अकबर के विरुद्ध विद्रोह करने के लिए फतवा जारी किया था।

अकबर द्वारा बनाई गई पंच महल पिरामिड के आकार का पांच महलों का भवन था और भारतीय बौद्ध विहारों के अनुरूप था।

अकबर का मकबरा सिकंदरा नामक गांव में स्थित है, जिसे सिकन्दर लोदी ने बसाया था। अकबर ने इसका नाम बहिश्ताबाद रखा था।

अकबर ने अपने राजकवि फैजी की अध्यक्षता में एक अनुवाद विभाग की स्थापना की। अकबर के आदेश से महाभारत के विभिन्न भागों का रज्मनामा नाम से फारसी में अनुवाद नकीब खाँ, बदायूंनी, अबुल फजल तथा फैजी के सहयोग से।

रामायण का फारसी मे अनुवाद – अब्दुल कादिर बदायूंनी
कालियादमन का फारसी में – अबुलफजल
लीलावती का – फैजी ने

जरींकलम की उपाधि – मुहम्मद हुसैन (अकबर द्वारा)

इंग्लैंड की रानी एलिजाबेथ का समकालीन भारतीय राजा अकबर था।

मुगलकालीन विद्वान अबुल फजल ने अमेरिका की खोज की।

अकबर के दरबार में आने वाला प्रथम अंग्रेजी व्यक्ति – राल्फ फिंच (फतेहपुर सिकरी तथा आगरा पहुंचने वाला)

अकबर शासन काल में क्रमशः –
- जजिया की समाप्ति
- इबादतखाना का निर्माण
- मजहर पर हस्ताक्षर
- दीने इलाही की स्थापना

जहाँगीर - राज्याभिषेक आगरे के किले में
न्याय की प्रसिद्ध जंजीर लगवायी – 60 घंटियां थी
12 घोषणाएँ प्रकाशित करवायी – जिन्हे आइने- जहाँगीरी कहा जाता है।
इनमें एक ऐम्मा - (भूमि का प्रमाणीकरण था) जो वाक्याते - जहाँगीरी में वर्णित है। (प्रशंसा और प्रार्थना के लिए दी गयी भूमि)
खुसरो को पनाह देने के आरोप में सिखो के 5वें गुरु अर्जुनदेव की हत्या।
अबुल फजल की हत्या – वीरसिंह बुंदेला ने की – इसे जहाँगीर ने पुरस्कृत किया था।
खुसरो, महाबत खां, खुर्रम, अब्दुला खां ने जहाँगीर के विरुद्ध विद्रोह किया था।
खुसरो जहाँगीर का सबसे बड़ा पुत्र था
जहाँगीर से विवाह के बाद नूरजहाँ ने नूरजहाँ गुट का निर्माण - प्रमुख सदस्य - एतमादुद्दौला या मिर्जा गियास बेग (नूरजहां का पिता) असमत बेग (माता) आसफ खां (भाई) शहजादा खुर्रम (बाद में शाहजहां)
बाद में खुर्रम इस गुट से अलग हो गया।
एतमादुद्दौला का मकबरा – नूरजहां ने बनवाया (आगरा में)
जहाँगीर के शासनकाल में हाकिन्स (1608-11) कंपनी का प्रतिनिधि और सर थामस रो (1615-19) (ब्रिटेन के राजा जेम्स प्रथम का दूत) आये थे।
जहांगीर ने थामस रो को अजमेर में मिलने का अवसर था। यह जहांगीर के पीछे अजमेर से मांडु आया
डच पर्यटक फ्रांसिस्को पेलसर्ट ने – जहाँगीर के शासनकाल का मूल्यवान विवरण दिया है।

धार्मिक नीति- रक्षाबन्धन, दीवाली का त्यौहार मनाया।
श्रीकान्त नामक हिन्दू को जज नियुक्त किया (हिन्दुओ के लिए)
सूरदास को आश्रय दिया- उसी के संरक्षण में सूरसागर की रचना हुयी।

दो अस्पा एवं सिंह अस्पा प्रथा जहाँगीर ने चलाई थी।
इसके अन्तर्गत बिना जात पद बढाये ही मनसबदारो को अधिक सेना रखनी पड़ती थी।

चित्तौड़ की संधि- 1615 में राणा अमर सिंह और जहाँगीर के मध्य। राणा ने जहाँगीर की अधिनता स्वीकार कर ली।
जहाँगीर को लाहौर (शाहदरा) में दफनाया गया।
जहाँगीर राज्यकाल में मुगल चित्रकला अपनी पराकाष्ठा पर पहुँची। प्रसिद्ध चित्रकार- फारुख बेग, दौलत, मनोहर मंसूर, अबुल हसन
उस्ताद मसूर - (नादिर उल-असर) - पक्षी विशेषज्ञ चित्रकार
अबुल हसन- (नादिर- उद - जमा) - व्यक्ति चित्र में महारत
आत्मकथा- तुजुक-ए- जहाँगीरी- फारसी भाषा में
जहाँगीर उच्च कोटि का लेखक और समालोचक था।

शाहजहाँ - जन्म लाहौर में - विवाह - अर्जुमन्द बानु बेगम से बाद में मुमताज महल के नाम से विख्यात

गोलकुण्डा से संधि के फलस्वरूप शाहजहां का नाम खुतबे और सिक्के दोनो पर सम्मिलित किया।

मीर जुमला (मुहम्मद सैय्यद) ने शाहजहाँ को कोहिनूर हीरा भेंट किया था।

शाहजहां का काल मुगलकाल का स्वर्ण काल माना जाता - कला, साहित्य, शिक्षा के क्षेत्र में पर्याप्त विकास हुआ।

शाहजहां ने ईरानी फारसी पद्य शैली के कवि कलिम को राजकवि नियुक्त किया।

शाहजहाँ के बल्ख अभियान का उद्देश्य - काबुल की सीमा से सटे बल्ख और बदख्शां में एक मित्र शासक को लाना ताकि वे ईरान और मुगल साम्राज्य के बीच बफर राज्य बन सके। ईरान और मुगल शासको के बीच कंधार राज्य झगड़े की जड़ थी।

शाहजहां के आश्रित कवि - कवींद्राचार्य (ब्रज और अवधी भाषा का समन्वय) सरस्वती की उपाधि धारण की।

दिल्ली की जामा मस्जिद - शाहजहाँ

हिन्दु और ईरानी वास्तुकला का सर्वप्रथम समन्वय आगरा के ताजमहल में मिलता है।

1628 ई में शाहजहां 'अबुल मुजफ्फर शहाबुद्दीन मु० साहिब किरन-ए-सानी' की उपाधि धारण कर गद्दी पर बैठा।

शाहजहाँ ने अपने साम्राज्य की राजधानी आगरा से दिल्ली स्थानांतरित की।

दिल्ली का लाल किला - शाहजहाँ
- पश्चिम द्वार - लाहौरी दरवाजा
- दक्षिण द्वार - दिल्ली दरवाजा

शाहजहां ने 1636-37 में सिजदा एवं पायबोस प्रथा समाप्त कर दिया — उसके स्थान पर चहार-तस्लीम की प्रथा शुरू
इलाही सवंत के स्थान पर हिजरी संवत की शुरुआत।
हिन्दुओं पर तीर्थ यात्रा कर लगाया (कुछ समय बाद हटा लिया)

दक्कन और गुजरात में भीषण अकाल पड़ा जिसका वर्णन पीटर मुंडी ने किया।

बादशाह के जीवित रहते मुगल बादशाह के पद के लिए इसके चारो पुत्रों में भयानक युद्ध हुआ जिससे अन्ततः औरंगजेब देवराई की लड़ाई में दारा शिकोह को पराजित कर विजय हासिल की।

दाराशिकोह - जन्म - 1615 (शाहजहां - मुमताज)
लेनपूल ने दारा को लघु अकबर कहा
शाहजहाँ ने दारा को शाहबुलन्द इकबाल की उपाधि दी।
दाराशिकोह ने भगवतगीता और योगवशिष्ट का फारसी में अनुवाद करवाया।
महत्वपूर्ण कार्य - वेदो का सकंलन
मज्म-उल-बहरीन की रचना की
दारा ने स्वंय तथा काशी के कुछ संस्कृत पंडितो की सहायता से 'बावन उपनिषदों' का सिर्र-ए-अकबर नाम से फारसी में अनुवाद कराया।
दाराशिकोह के सूफीमत से सम्बंधित ग्रन्थ—
- सफीनत-उल-औलिया - (सूफियों का जीवन वृत्त)
- तरीकत-उल-हकिकत - (आध्यात्मिक मार्ग का विभिन्न चरण)
- रिसालाएं-हक-नुमा — (सूफी प्रथाओं का वर्णन)
- हसनात-उल-आरफीन - (सन्तो की वाणी का संकलन)

औरंगजेब - शाहजहां का पुत्र - उत्तराधिकारी बना तलवार के बल पर (दारा शुजा और औरंगजेब में इसका क्रम तीसरा)

औरंगजेब का दो बार राज्याभिषेक हुआ पहला दिल्ली में (31 जुलाई 1658) अबुल मुजफ्फर आलमगीर की उपाधि धारण की।

खंजवा और देवराई के युद्ध में क्रमशः शुजा और दारा को अन्तिम रूप से परास्त करने बाद दिल्ली में ही दूसरा राज्याभिषेक कराया - 15 Jun 1659

धरमट का युद्ध - औरंगजेब और दारा शिकोह के बीच 15 अप्रैल 1658 को म०प्र० में उज्जैन के निकट - इस युद्ध ने औरंगजेब को काफी सुदृढ़ बना दिया।

मुहम्मद अकबर - (औरंगजेब का पुत्र) 1681 ई विद्रोह करके राजपूतो के विरुद्ध अपने पिता की स्थिती दुर्बल कर दी।

पुरंदर की संधि - (जून 1665 में) औरंगजेब ने राजा जयसिंह को बीजापुर एवं शिवाजी का दमन करने के लिए भेजा। फलस्वरूप सर्वप्रथम जयसिंह ने शिवाजी को पुरंदर की संधि के लिए विवश किया। लेकिन बीजापुर में सफलता नहीं मिली। 1686 में सुल्तान सिकंदर आदिलशाह ने औरंगजेब के सामने आत्मसमर्पण कर दिया — बीजापुर मुगल साम्राज्य में औरंगजेब ने आदिलशाह को 'खान' का पद दिया।

औरंगजेब शहजादा शाहआलम को गोलकुण्डा पर आक्रमण करने भेजा - (1686 में) औरंगजेब खुद 1687 ई. अब्दुल्लागनी नामक अफगान को लालच देकर अपनी ओर मिला लिया और किले को जीतकर गोलकुण्डा को मुगल साम्राज्य में मिला लिया

औरंगजेब ने जहां आरा को 'साहिबात-उज-जमानी' की उपाधि प्रदान की थी

पुत्र मु. अकबर के विद्रोह को दबाने दक्कन गया और यही अन्ततः औरंगजेब के पतन का कारण बना।

औरंगजेब को मुसलमान जिंदा पीर के रूप में मानते थे। तथा उसके समकालीन उसे शाही दरवेश समझते थे।

इसके शासनकाल के दौरान मुगल सेना में सर्वाधिक हिन्दू सेनापति थे।

बीबी का मकबरा – औरंगजेब ने औरंगाबाद में अपनी पत्नी राबिया-उद्-दौरानी के मकबरे का निर्माण – 1678 ई० मे द्वितीय ताजमहल भी कहा जाता है।

औरंगजेब की पुत्री – मेहरून्निसा, जहांआरा, रोशन आरा जेबुन्निसा, जीनतुन्निसा

दिल्ली के लाल किले में मोती मस्जिद का निर्माण – औरंगजेब ने कराया क्योंकि शाहजहां ने अपनी योजना के अनुसार किले के अन्दर मस्जिद का निर्माण न करवा कर किले के बाहर जामा मस्जिद का निर्माण करवाया था।

संतरबि दास महाराष्ट्र के महान संत थे यह मुगल शासक औरंगजेब के समकालीन थे।

धार्मिक नीति – इस्लामी कानूनो को अक्षरशः पालन करने के कारण इसे जिंदा पीर कहा जाता था।

कुरान को शासन का आधार बनाया तथा नारा दिया दार-उल-हर्ब (काफिरो का देश) को दार-उल-इस्लाम बनाना

सिक्को पर कलमा अकंन, नौरोज प्रथा, संगीत समारोह, तुला दान, झरोखा दर्शन को समाप्त कर दिया।

औरंगजेब द्वारा चलाये गये जिहाद का अर्थ – दारुल-इस्लामी

जजिया कर औरंगजेब के शासनकाल में पुनः लगाया गया परन्तु 1704 में दक्कन से यह कर उठा लेना पड़ा।

विद्रोह – जाट, सतनामी, अफगानी, बुन्देल का

मुगल प्रशासन / कला साहित्य

मुगल प्रशासन सैन्य शक्ति पर आधारित एक केन्द्रीयकृत व्यवस्था — नियंत्रण एवं सन्तुलन पर आधारित थी।

यह भारतीय पृष्ठभूमि में अरबी-फारसी का सम्मिश्रण था।

मंत्रीपरिषद् के लिए विजारत शब्द का प्रयोग किया गया।

मीर बख्शी — सैन्य विभाग का प्रधान, उच्चाधिकारियों सहित सभी श्रेणीयों के मनसबदारों की नियुक्ति

यह भू-राजस्व अधिकारियों का पर्यवेक्षण करता था तथा साथ ही सैन्य विभाग के वेतन के लिए उत्तरदायी था।

मीर-ए-सामाँ — घरेलू मामलों का प्रधान

सद्र-ए-सुदूर — धार्मिक मामलों में बादशाह का सलाहकार इसे शेख-उल-इस्लाम कहा जाता

मुहतसिब — जन आचरण के निरीक्षण विभाग का प्रधान, इसका कार्य सार्वजनिक आचरण को उच्च बनाये रखना था। (लोक आचरण अधिकारी)

मुख्य काजी — मुगल बादशाह सभी मुकदमों का निर्णय स्वयं नहीं कर पाते थे इसलिए उनने राजधानी में एक मुख्य काजी नियुक्त किया — मुस्लिम कानून के अनुसार न्याय करना।

प्रान्तीय शासन — प्रशासन की दृष्टि से मुगल साम्राज्य को सूबों (प्रान्तों)

सूबों को सरकारों (जिलो में)

सरकारों को परगनो (महालों में)

परगनों को गावों में बाटा गया था।

मीर आतिश — यह शाही तोपखाने का प्रधान

दीवान-ए-तन — वेतन और जागीरों से सम्बंधित मामलों का निपटारा

मीर-ए-तोजक — धर्मानुष्ठान का अधिकारी

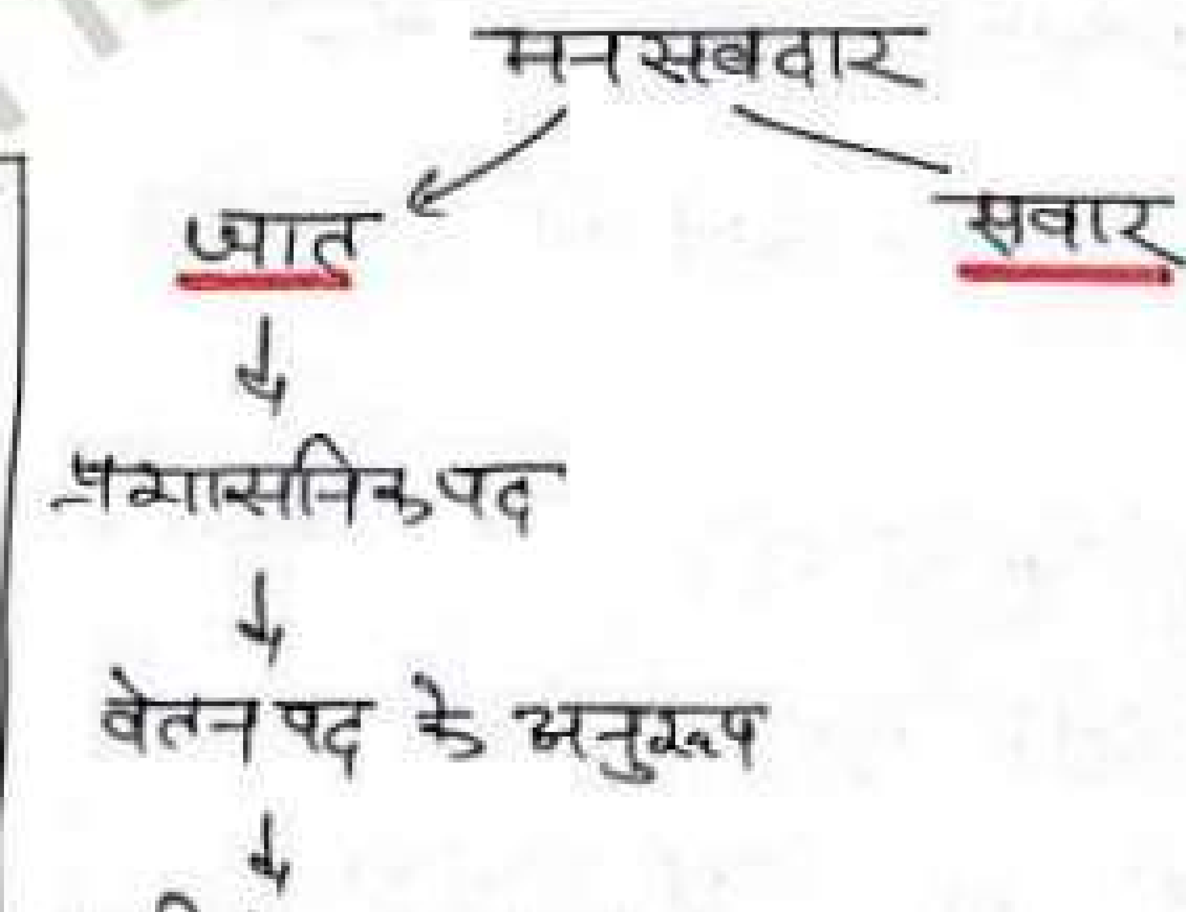
– ये बादशाह द्वारा ...

ारो की कमान अथवा सेवा में रख ...

ारी व्यवस्था - अकबर के द्वारा दशमल...

मनसबदारी प्रथा को लागू किया ग...

चंगेज खान के प्रणाली पर आधारित ...



मुगलकालीन भारत में राज्य की आय का स्रोत – भू-राजस्व

अकबर के शासनकाल में सामान्य रूप से उपज का 1/3 भाग भू-राजस्व के रूप में लिया जाता था।

शाहजहाँ के शासनकाल में भूमि पर भू-राजस्व बढ़कर 50 प्रतिशत तक हो गया था जबकि कुओं द्वारा सिंचित भूमि पर 1/3 भाग ही लिया जाता

शाहजहां के शासनकाल में भू-राजस्व वसूल करने के लिए ठेकेदारी प्रथा का प्रचलन शुरू किया।

मुगल प्रशासनिक शब्दावली में 'माल' शब्द भू-राजस्व से सम्बंधित था।

✓ मद्द-ए-माश – विद्वानों को दी जाने वाली राजस्व मुक्त अनुदत्त भूमि। यह मुख्यतः अन्न उत्पादक भूमि थी।

तम्बाकू पर निषेध – जहांगीर ने

✓ खालसा भूमि – राजकीय भूमि, इससे प्राप्त कुल आय राज्यकोष में जमा होता था।

✓ जागीर भूमि – भूमि जो वेतन के रूप में सैनिको और प्रशासनिक पदाधिकारों को प्रदान की जाती थी।

अकबर ने शेरशाह द्वारा अपनाएं गये 'रै'या'राई' पद्धति को अपनाया, जिसमे भूमि की पैमाइश की जाती थी।

1580 में टोडरमल की अनुशंसा पर दहसाला पद्धति (भू-राजस्व प्रणाली) अपनायी गयी।

✓ अकबर ने 'गज-ए-इलाही' के माध्यम से भूमि का मापन करवाया।

दो तरह के कृषक थे –

1.) खुदकाश्त – कृषक जो स्वतः अपनी भूमि पर कार्य करते थे वे अपनी भूमि के मालिक होते थे।

2.) पाहीकाश्त – ये भूमिहीन कृषक होते थे जो दूसरे की जमीन को लेकर कृषि कार्य करते थे।

✓ मध्यकाल में बटाई शब्द का अर्थ – लगान निर्धारण का तरीका

सिक्का - अकबर के एक सिक्के को रामसीय सिक्का कहा जाता था।
चांदी के सिक्के को रुपया - सर्वप्रथम शेरशाह ने चलाया था
तांबे के सिक्के को दाम - [illegible] ने चलाया था।
जहांगीर ने निसार नामक सिक्का चलाया जो रुपये का एक-चौथाई होता था।
'आना' सिक्के का प्रचलन - शाहजहां ने कराया
औरंगजेब के शासनकाल में सर्वाधिक चांदी का रुपया मुद्रित हुआ
मुगलकाल में सबसे ज्यादा सोने के सिक्के (मुहर) जारी किया गया था।

मिर-ए-आतिश - बन्दूक और तोप विभाग का अध्यक्ष

चित्रकला -

हुमायुं ने 'तारीखे-खानदानी-तैमुरिया' के पाण्डुलिपि के चित्रण के लिए ईरानी चित्रकार मीर-सैय्यद अली और अब्दुस्समद की सेवाएं ली।

अकबर के शासनकाल में 'दास्तान-ए-अमीन-हम्जा' का चित्रण प्रारम्भ हुआ।

अकबर के समय 'दसवन्त' प्रसिद्ध चित्रकार था जिसके चित्र रज्मनामा में प्राप्त होते हैं।

जहांगीर (Most learned ruler) के काल में सबसे प्रसिद्ध चित्रकार 'मंसूर' और 'अब्दुल हसन' थे जिन्हे क्रमशः नादिर-उल-असर' और नादिर-उल-जमा की उपाधि दी।

मंसूर — साइबेरिया का सारस, बंगाल का एक पुष्प] (पशुपक्षी के चित्रण में महारथ)

शाहजहां ने वास्तुकला को महत्व दिया किन्तु उस समय 'मोहम्मद फकीर' और 'मोहम्मद हासिब' दो प्रसिद्ध चित्रकार थे। शाहजहां के समय अलंकरण पर विशेष बल दिया गया।
औरंगजेब चित्रकारी के विरुद्ध था।

शिक्षा -

बाबर के काल में शुहरते- आम नामक विभाग स्थापित किया जिसका काम शिक्षा को प्रसारित करना था।

हुमायूं ज्योतिष और भूगोल का ज्ञाता था। इसने अपने पुराने किले में शेरमण्डल नामक पुस्तकालय स्थापित कर रखा था।

अकबर के समय फतेहपुर सिकरी शिक्षा का मुख्य केन्द्र था

शाहजहां ने दिल्ली में दारुल-बका नामक स्कूल की स्थापना की।

(4) मुगल चित्रकला में युद्ध दृश्य, पशु पक्षी, और प्राकृतिक दृश्य तथा दरबारी चित्रण का अकंन किया गया था।

चित्रकला की मुगल शैली का प्रारम्भ - हुमायूं ने (दो पारसी चित्रकारों की सेवाएं ली - मीर सैयद अली & अब्दुस्समद)

मुगल चित्रकला ने पहाड़ी, राजस्थानी एवं कांगड़ा चित्रकला को प्रभावित किया किन्तु कालीघाट चित्रकला पर मुगल प्रभाव नहीं है।

दास्तान- ए- अमीर हम्जा - अब्दुस्समद द्वारा चित्रांकन-(कराया अकबर ने)

जहाँगीरी चित्रकार - अबुल हसन, उस्ताद मंसूर, फार्रुख बेग बिशनदास, आका रिजा, मोहम्मद मुराद, मनोहर, माधव तथा गोवर्धन जहांगीर - (मुगल चित्रकला का स्वर्णयुग।)

मुगल चित्रकला - जहाँगीर के काल में अपने शिखर पर थी।

पहाड़ी स्कूल, राजपूत स्कूल, मुगल स्कूल और कांगड़ा स्कूल मध्यकालीन चित्रकला की विभिन्न शैली को दर्शित करते हैं।

राजस्थान की किसनगढ़ शैली - चित्रकला से सम्बंधित

वीणा संगीत वाद्य यंत्र - (औरंगजेब की दक्षता बजाने में)

प्रातःकाल गाये जाने राग - तोड़ी (यह राजदरबारों में भाटों एवं चारणों में द्वारा गया जाता है।

अकबर के शासनकाल में ध्रुपद गायक - तानसेन और हरिदास

जहांगिर के दरबार का - बिलास खान (संगीतज्ञ)

तानसेन अकबर के दरबार का प्रसिद्ध संगीतज्ञ था। अकबर के नवरत्नों में से एक था। (मूल नाम — रामतनु पाण्डेय)
इसका मकबरा — ग्वालियर में
अकबर ने तानसेन को 'कंठाभरणवाणीविलास' की उपाधि प्रदान की थी।

गुलबदन बेगम पुत्री थी — बाबर की
इसकी रचना - हुमायूनामा में ऐतिहासिक विवरण लिखे हैं।

मदरसा-ए बेगम (दिल्ली का शिक्षा केन्द्र) — माहम अनगा ने दिल्ली के पुराने किले में खैरुल मनजिल नामक मदरसा की स्थापना की जिसे मदरसा-ए-बेगम कहा जाता है।

अकबर के शासनकाल में हितोपदेश का फारसी भाषा में अनुवाद 'मफरीह-उल-कुलूब' के नाम से ताजुल माली द्वारा किया गया था।

हसन निजामी — ताजुल मासिर
मुअतमद खाँ — इकबालनामा जहाँगीरी
मुहम्मद काज़िम — आलमगीरनामा
भीमसेन — नुस्खा-ए-दिलकुशा

कवि हृदय राजा जिसने नागरीदास के नाम से कृष्ण की प्रशंसा में छंद लिखे — राजा सावंत सिंह थे।

तुज़ुक-ए-बाबरी — बाबरी
हुमायूनामा — गुलबदन बेगम
तारीखे शेरशाही — अब्बासी खां सरवानी
तबकाते अकबरी — निजामुद्दीन अहमद

अनवार-ए-सुहाइली नामक ग्रन्थ — पंचतंत्र का अनुवाद
मुगलकाल में दरबारी और अदालती भाषा — फारसी
नस्तालीक — एक प्रकार की फारसी लिपि जो मध्यकालीन भारत में प्रयुक्त होती थी।
रामचंद्रिका एवं रसिकप्रिया हिंदी कविता — केशवदास की रचना
अबुल फजल द्वारा अकबरनामा — सात वर्षों में पूरा किया गया था।